अग्निशिखा एवम् पुरोधा

अखिल भारतीय पत्रिका

जनवरी २०२४

आशा

अग्निशिखा एवम् पुरोधा जनवरी २०२४ वर्ष १, अंक ६, पूर्णांक ६

विषय-सूची

आशा

प्रार्थना/सम्पादकीय		३
भविष्य की आशा		७-३९
पुरोधा : दैनन्दिनी		४०
'दिव्य शरीर में दिव्य जीवन' : भागवत चेतना में रहना	नवजातजी	४२
प्रेम कितना महान् है!	'अवेकनिंग' से	४३
बालक-जैसा बनने की आशा	पूजालाल जी	४४
मैं आ रहा हूँ! (कविता)	'मधु-सञ्चय' से	४५
कहाँ छुपी हैं शक्तियाँ!	'शिशु मन्दिर सन्देश' से	४६
बच्ची का अटूट भरोसा	वन्दना	४७

अग्निशिखा

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

वार्षिक शुल्क : एक वर्ष—२००रु.; तीन वर्ष—५८०रु.; पाँच वर्ष—९६०रु.

संस्थापक : श्रीअरविन्द सोसायटी

मुद्रक : स्वाधीन चैटर्जी, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस

प्रकाशक : प्रदीप नारंग, श्रीअरविन्द सोसायटी

प्रकाशक स्थल : सोसायटी हाउस, ११ सैं मार्तैं स्ट्रीट, पॉण्डिचेरी ६०५००१

मुद्रण-स्थल : श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, नं. ३८, गूबैर ऐवेन्यू, पॉण्डिचेरी ६०५००१, भारत

सम्पादक : वन्दना

स्वामी : श्रीअरविन्द सोसायटी, पॉण्डिचेरी-६०५००१

दूरभाष संख्याएँ (०४१३) २३३६३९६-९७-९८

Email: info@aurosociety.org

Website: www. aurosociety.org

प्रार्थना

९ सितम्बर १९१४

जगत् दो परस्पर-विरोधी शक्तियों में बँटा हुआ है जो आधिपत्य के लिए संघर्षरत हैं और दोनों ही, हे प्रभो, समान रूप से तेरे विधान के विरुद्ध हैं क्योंकि तू न तो नैतिक अवरोध चाहता है न अन्ध विनाश। तू अपने-आपको सतत, प्रगतिशील और आलोकमय रूपान्तर में प्रकट करता है और अगर हम तेरी इच्छा को अभिव्यक्त करना चाहें तो हमें पृथ्वी पर इसी को स्थापित करना होगा।

कभी-कभी हमारी अधीरता तुरन्त इस अभिव्यक्ति के साधन जानना चाहती है। लेकिन हमारी अधीरता व्यर्थ है और उसे कोई उत्तर नहीं मिलता। क्योंकि ज्ञान अपने उपयुक्त समय पर आयेगा, कर्म के समय पर।

अतः, विचार को शान्त करके और शान्त तथा बलवान्, चरितार्थ करने वाली इच्छा के साथ हम उस संकेत के लिए प्रतीक्षा करते हैं जो **तू** हमें देगा।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १, पृ. १४०

सम्पादकीय : इन अशान्त कालों में मानवता आशा का दीप जलाये बैठी है ताकि नये उत्साह-उमंग और स्फूर्ति से लैस होकर वह अपनी अग्रिम कूच के लिए चल पड़े।

यह अंक आशा के उस स्रोत को समर्पित है जो हमारे अन्दर निरन्तर बहता रहता है।

मुखपृष्ठः

आशा

जीवन का पथ तैयार करती है

(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)

Bonne Année
Blessings

शुभ नववर्ष

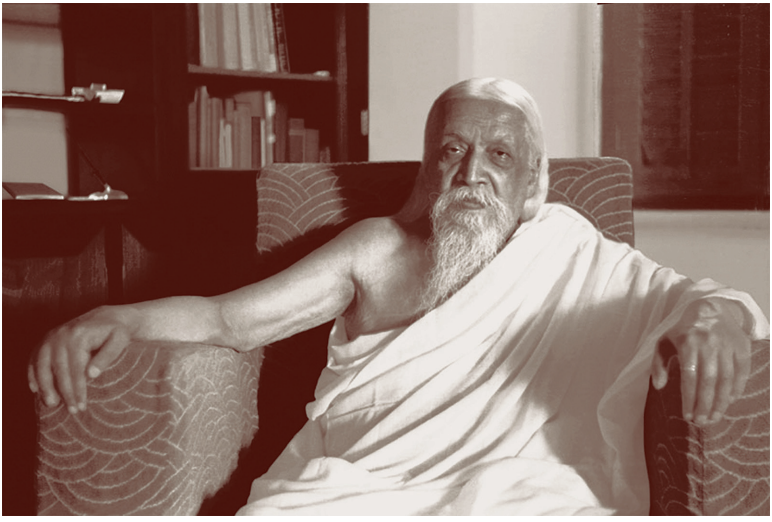

इसका कोई महत्त्व नहीं है कि हज़ारों सत्ताएँ गहनतम अज्ञान में धँसी हुई हैं, जिन्हें हमने कल देखा था वे तो पृथ्वी पर हैं; उनकी उपस्थिति यह प्रमाणित करने के लिए काफ़ी है कि एक दिन आयेगा जब अन्धकार प्रकाश में रूपान्तरित हो जायेगा और पृथ्वी पर तेरा शासन सचमुच प्रतिष्ठित हो जायेगा।

हे प्रभो, इस चमत्कार के दिव्य रचयिता, जब मैं उसके बारे में सोचती हूँ तो मेरा हृदय आनन्द और कृतज्ञता से उमड़ने लगता है और मेरी आशा की कोई सीमा नहीं रहती।

मेरी आराधना समस्त शब्दों के परे है, मेरी श्रद्धा-भक्ति निःशब्द है।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १, पृ. ७०

जनवरी १९०८ :

'निर्वाण' की उपलब्धि।

श्रीअरविन्द महाराष्ट्र के एक योगी, विष्णु भास्कर लेले से मिले। लेले के निर्देशों का अनुसरण कर, मन की पूर्ण नीरवता, नीरव ब्रह्म की अनुभूति तक पहुँच गये।

जनवरी १९२२ :

श्रीमाँ ने श्रीअरविन्द के घर का इन्तज़ाम अपने हाथों में ले लिया।

इस वर्ष से सान्ध्य-वार्ताएँ तथा सामूहिक ध्यान नियमित रूप से होने लगे।

जनवरी १९३४ :

आश्रम के भोजनालय का उद्घाटन।

अतिमानसिक उपलब्धि का प्रारम्भ
अपने मनमोहक सौन्दर्य के साथ यह विजय का अग्रदूत है।
(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)
पलाश

जनवरी

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

भविष्य की आशा

श्रीअरविन्द धरती की आध्यात्मिक प्रगति के इतिहास में जिस चीज़ का प्रतिनिधित्व करते हैं वह कोई शिक्षा नहीं है, कोई अन्तःप्रकाश भी नहीं है; वह है सीधी परम पुरुष से आने वाली एक महान् क्रिया।

वे धरती को यह आदेश देने आये हैं कि वह अपने प्रकाशमय भविष्य के लिए तैयारी करे।

*

श्रीअरविन्द जगत् के लिए दिव्य भविष्य का आश्वासन लाये।

*

श्रीअरविन्द धरती पर पुराने मतों अथवा पुरानी शिक्षाओं के साथ प्रतियोगिता करने के लिए कोई शिक्षा या मत लाने के लिए नहीं आये हैं, वे अतीत को पार करने का तरीक़ा दिखाने और सन्निकट और अनिवार्य भविष्य के लिए सुस्पष्ट मार्ग बनाने आये हैं।

*

हे प्रभो, आज प्रातः तूने मुझे यह आश्वासन दिया है कि जब तक तेरा कार्य संपन्न नहीं हो जाता, तब तक तू हमारे साथ रहेगा, केवल एक चेतना के रूप में ही नहीं जो पथ-प्रदर्शन करती और प्रदीप्त करती है बल्कि कार्यरत एक गतिशील 'उपस्थिति' के रूप में भी। तूने अचूक शब्दों में वचन दिया है कि तेरा सर्वांश यहाँ विद्यमान रहेगा और पार्थिव वातावरण को तब तक न छोड़ेगा जब तक पृथ्वी का रूपान्तर नहीं हो जायेगा। वर दे कि हम इस अद्‌भुत 'उपस्थिति' के योग्य बन सकें, अब से हमारे अन्दर की प्रत्येक वस्तु तेरे उदात्त कार्य को पूर्ण करने हेतु अधिकाधिक परिपूर्णता से समर्पित होने के एकमात्र संकल्प पर एकाग्र हो।

*

श्रीअरविन्द की चिरन्तन सहायता को हमें ग्रहण करना सीखना चाहिये।

*

श्रीअरविन्द हमेशा हमारे साथ हैं, हमें प्रकाश देते हैं, रास्ता दिखलाते हैं और हमारी रक्षा करते हैं। हम पूर्णनिष्ठ बन कर ही उनकी कृपा के पात्र बन सकेंगे। **'श्रीमातृवाणी'**, खण्ड १३, पृ. ४, ६, १३

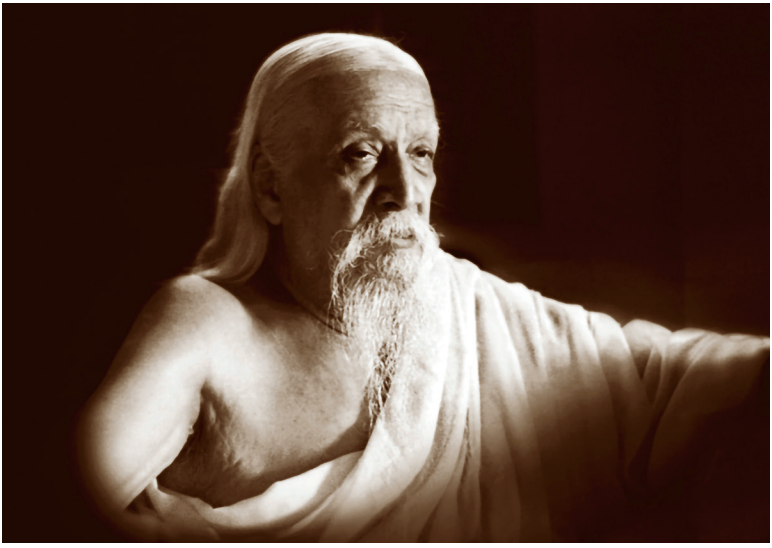

भगवान् के बिना हम सीमित, अक्षम
और असहाय प्राणी हैं; भगवान् के साथ
यदि हम अपने-आपको पूरी तरह उन्हें समर्पित कर सकें,
तो सब कुछ सम्भव है और हमारी प्रगति असीम होगी।
श्रीअरविन्द के शताब्दी-वर्ष के लिए
एक विशेष सहायता धरती पर आयी है;
आओ, अहंकार पर विजय प्राप्त करने
और प्रकाश में उभर आने के लिए हम इसका लाभ उठायें।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १३, पृ. १७

श्रीअरविन्द जगत् को उस भविष्य के सौन्दर्य के बारे में बतलाने आये थे जिसे चरितार्थ होना ही है।

वे उस भव्यता की आशा नहीं, निश्चिति देने आये थे जिसकी ओर जगत् बढ़ रहा है। जगत् एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना नहीं है, यह एक ऐसा चमत्कार है जो अपनी अभिव्यक्ति की ओर गति कर रहा है।

जगत् को भविष्य के सौन्दर्य की निश्चिति की ज़रूरत है। और श्रीअरविन्द ने यह आश्वासन दिया है।

*

श्रीअरविन्द हमें शानदार भविष्य की ओर जाने का मार्ग दिखलाते हैं।

श्रीअरविन्द का सन्देश भविष्य पर विकीरित होता हुआ अमर सूर्यालोक है।

*

श्रीअरविन्द परम पुरुष के यहाँ से धरती पर एक नयी जाति और एक नये जगत् की अभिव्यक्ति की घोषणा करने आये थे, और वह है : अतिमानसिक।

आओ, हम पूरी सच्चाई और लगन के साथ उसके लिए तैयारी करें।

*

मनुष्य बीते कल की सृष्टि है।

श्रीअरविन्द घोषणा करने आये थे आगामी कल की सृष्टि की : अतिमानसिक सत्ता के आगमन की।

*

क्षण-भर के लिए भी यह विश्वास करने में न हिचकिचाओ कि श्रीअरविन्द ने परिवर्तन के जिस महान् कार्य के लिए बीड़ा उठाया है उसकी पूर्णाहुति सफलता में ही होगी। क्योंकि यह वस्तुतः एक तथ्य है : हमने जो काम हाथ में लिया है उसके बारे में सन्देह की कोई छाया भी नहीं है...। रूपान्तर होगा ही होगा : कोई चीज़ उसे नहीं रोक सकती, सर्वशक्तिमान् के आदेश को कोई विफल नहीं कर सकता। समस्त शंकाशीलता और दुर्बलता को उठा फेंको और उस महान् दिवस के आने तक कुछ समय वीरता के साथ सहन करने का निश्चय करो, यह लम्बा युद्ध चिर विजय में बदल जायेगा। **'श्रीमातृवाणी'**, खण्ड १३, पृ. १५, २०, २२

६ फ़रवरी १८९३ :

फ़रवरी के प्रारम्भ में श्रीअरविन्द भारत लौट आये।

२१ फ़रवरी १८७८ :

पैरिस में श्रीमाँ का जन्म हुआ।

२८ फ़रवरी १९६८ :

ओरोवील दिवस, 'ओरोवील का स्थापना-दिवस' नाम से प्रचलित है यह दिन।

२९ फ़रवरी १९५६ :

अतिमानसिक अभिव्यक्ति का दिवस। श्रीमाँ को धरती पर अतिमानसिक अवतरण की ठोस अनुभूति हुई थी।

फ़्रांस में, १८८५

फ़रवरी

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29		

५ फ़रवरी १९१३

मेरे हृदय की निश्चलता में तेरी आवाज़ सुरीले राग की तरह सुनायी देती है और मेरे मस्तिष्क में ऐसे शब्दों में अनूदित होती है जो अपर्याप्त होते हुए भी तुझ से ओत-प्रोत हैं। और ये शब्द पृथ्वी को सम्बोधित करते हुए उससे कहते हैं :—बेचारी दुःखी पृथ्वी, याद रख कि मैं तेरे अन्दर विराजमान हूँ और आशा न छोड़। हर प्रयास, हर दुःख, हर ख़ुशी, हर पीड़ा, तेरे हृदय की प्रत्येक पुकार, तेरी अन्तरात्मा की हर अभीप्सा, तेरी ऋतुओं का हर पुनर्नवीकरण, सब के सब, बिना अपवाद के, जो तुझे दुःखपूर्ण लगता है और जो तुझे सुखद मालूम होता है, जो तुझे कुरूप लगता है और जो तुझे सुन्दर मालूम होता है, सभी तुझे निरपवाद रूप से मेरी ओर लाते हैं और मैं अनन्त 'शान्ति', छायाहीन 'प्रकाश', पूर्ण 'सामञ्जस्य', 'निश्चिति', 'विश्राम' और परम 'धन्यता' हूँ।

सुन, हे धरित्री, उस उत्कृष्ट वाणी को सुन जो उठ रही है।

सुन और नया साहस जगा!

२९ जनवरी १९१४

प्रेम के हे दिव्य स्वामी, हर सत्ता में तेरी उपस्थिति के कारण हर मनुष्य, यहाँ तक कि अत्यन्त क्रूर मनुष्य भी दया पा सकता है और अत्यन्त दुष्ट भी मान-सम्मान, प्रायः अपने बावजूद मान और न्याय पाता है। सभी परिपाटियों और पक्षपातों के परे, एक विशेष, दिव्य और शुद्ध प्रकाश द्वारा तू उस सबको प्रकाशित करता है जो हम हैं और जो कुछ हम करते हैं और हमें स्पष्ट रूप से, हम जो वास्तव में हैं और जो हम हो सकते हैं, उनके बीच का भेद दिखलाता है।

तू अशुभ के बाहुल्य, अन्धकार और दुर्भावना के विरुद्ध अलंघ्य बाधा है। तू प्रत्येक हृदय में सम्भाव्य और भावी पूर्णताओं की जीवन्त आशा है।

मेरी आराधना का समस्त उत्साह तेरी सेवा में है।

तू हमारी कल्पना के लिए ऐसा सुगम द्वार है जो असन्दिग्ध और अकल्पनीय भव्यताओं की ओर ले जाता है, ऐसी भव्यताओं की ओर जो क्रमशः हमारे सम्मुख प्रकट की जाती रहेंगी।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १, पृ. १५, ३९-४०

यहीं पर श्रीमाँ श्रीअरविन्द से पहली बार २९ मार्च १९१४, शाम के ३.३० बजे मिली थीं।

श्रीमाँ का पॉण्डिचेरी में प्रथम आगमन। **२९ मार्च १९१४** को श्रीमाँ पॉण्डिचेरी आयीं और श्रीअरविन्द से पहली बार उनकी भेंट हुई।

मार्च

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

जीवन में सब प्रकार के भय, संकट और विनाश से बच कर चलने के लिए दो ही चीज़ों की आवश्यकता है, दो चीज़ें जो सदा साथ रहती हैं —एक तो भगवती माँ की कृपा, और दूसरी, तुम्हारी ओर से ऐसी आन्तरिक स्थिति जो श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण से पूर्ण हो।

CWSA खण्ड ३२, पृ. ८

तुम्हारी श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण जितने अधिक पूर्ण होंगे, भगवती माँ की कृपा और रक्षा भी उतनी ही अधिक रहेगी। और जब भगवती माँ की कृपा और अभय-हस्त तुम पर है तो फिर कौन-सी चीज़ है जो तुम्हें स्पर्श कर सके या जिसका तुम्हें भय हो? कृपा का छोटा-सा कण भी तुम्हें सब कठिनाइयों, बाधाओं और संकटों के पार ले जायेगा; क्योंकि यह मार्ग माँ का है, इसलिए किसी भी संकट की परवाह किये बिना, किसी भी शत्रुता से प्रभावित हुए बिना—चाहे वह कितनी ही शक्तिशाली क्यों न हो, चाहे वह इस जगत् की हो या अन्य अदृश्य जगत् की—इसकी पूर्ण उपस्थिति से घिर कर तुम अपने मार्ग पर सुरक्षित होकर आगे बढ़ सकते हो। इसका कृपा-स्पर्श कठिनाई को सुयोग में, विफलता को सफलता में और दुर्बलता को अविचल बल में परिणत कर देता है। क्योंकि भगवती माँ की कृपा परमेश्वर की अनुमति है, आज हो या कल, उसका फल निश्चित है, पूर्वनिर्दिष्ट, अवश्यम्भावी और अनिवार्य है।

CWSA खण्ड ३२, पृ. ८

मेरे प्रभो, तू मुझसे जो करवाना चाहता था वह मैंने कर दिया। 'अतिमानस' के द्वार पूरी तरह खोल दिये गये हैं और 'अतिमानसिक चेतना', 'ज्योति' और 'शक्ति' की धरती पर बाढ़ आ गयी है।

*

तुम्हारी प्रगति और तुम्हारे काम में मदद देने के लिए मेरी सहायता हमेशा तुम्हारे साथ है।

तुम जिन कठिनाइयों को आज नहीं पार कर सकते उन्हें कल या बाद में पार कर लिया जायेगा।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १३, पृ. ५७, ७०

श्वेत कमल
अदिति—भागवत चेतना

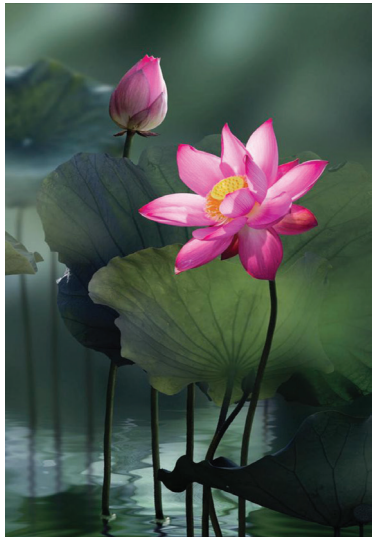

पाटल कमल
अवतार—परम प्रभु ने पृथ्वी पर पार्थिव रूप धारण किया

श्रीअरविन्द ४ अप्रैल १९१० को पॉण्डिचेरी आये।

पॉण्डिचेरी में श्रीमाँ का अन्तिम आगमन २४ अप्रैल १९२० में, ४२ वर्ष की उम्र में, माँ पॉण्डिचेरी में हमेशा के लिए बस जाने के लिए वापस आ गयीं।

अप्रैल

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

बढ़ते हुए प्रकाश और शान्ति में मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।

आगे बढ़ो, सदा ऊपर उठते हुए प्रेम, आनन्द और शान्ति में हमेशा आगे बढ़ते रहो।

*

मेरे बालक मुझे कभी न लिखें फिर भी मैं उन्हें हमेशा समान रूप से याद करती और उनसे प्रेम करती हूँ—और सभी सच्ची प्रार्थनाओं को हमेशा प्रत्युत्तर मिलता है चाहे मैं स्वयं न भी लिखूँ। इसलिए दुःख न करो। और ख़ुश रहो।

*

मैं हमेशा ऊपर की ओर देखती हूँ। 'सौन्दर्य', 'शान्ति', 'प्रकाश' वहाँ मौजूद हैं, वे नीचे आने के लिए तैयार हैं। अतः, हमेशा अभीप्सा करो और उन्हें इस धरती पर अभिव्यक्त करने के लिए ऊपर देखो।

दुनिया की कुरूप चीज़ों की ओर नीचे न देखो। तुम जब कभी दुःखी होओ, तो हमेशा मेरे साथ ऊपर देखो।

*

वस्तुतः भगवान् हर एक व्यक्ति को वही देते हैं जिसकी वह उनसे आशा करता है। अगर तुम यह मानते हो कि भगवान् बहुत दूर और क्रूर हैं, तो वे दूर और क्रूर होंगे, क्योंकि तुम्हारे चरम कल्याण के लिए यह ज़रूरी होगा कि तुम भगवान् के कोप का अनुभव करो; काली के पुजारियों के लिए वे काली होंगे और भक्तों के लिए 'परमानन्द'। और ज्ञानपिपासु के लिए वे 'सर्वज्ञान' होंगे, मायावादियों के लिए परात्पर 'निर्गुण ब्रह्म'; नास्तिक के साथ वे नास्तिक होंगे और प्रेमी के लिए प्रेम। जो उन्हें हर क्षण, हर गति के आन्तरिक निदेशक के रूप में अनुभव करते हैं उनके लिए वे बन्धु और सखा, हमेशा सहायता करने के लिए तैयार, वफ़ादार दोस्त रहेंगे। और अगर तुम यह मानो कि वे सब कुछ मिटा सकते हैं, तो वे तुम्हारे सभी दोषों, तुम्हारी सभी भ्रान्तियों को, बिना थके, मिटा देंगे, और तुम हर क्षण उनकी अनन्त 'कृपा' का अनुभव कर सकोगे। वस्तुतः भगवान् वही हैं जो तुम अपनी गहरी-से-गहरी अभीप्सा में उनसे आशा करते हो।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १३, पृ. ७४, ७०-७१, ७८

श्रीअरविन्द **५ मई १९०८ से ६ मई १९०९** तक जेल में रहे। ६ मई को उन्हें छोड़ा गया।

छूटने के बाद उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक भाषण **३० मई १९०९** को दिया जो अब उत्तरपाड़ा भाषण के नाम से प्रसिद्ध है।

उत्तरपाड़ा भाषण से उद्धृत, "एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन बीत गये, तब मेरे अन्दर से एक आवाज़ आयी, "ठहरो और देखो कि क्या होता है।" तब मैं शान्त हो गया और प्रतीक्षा करने लगा। मैं लालबाज़ार थाने से अलीपुर जेल में ले जाया गया और वहाँ मुझे एक महीने के लिए मनुष्यों से दूर एक निर्जन कालकोठरी में रखा गया। वहाँ मैं अपने अन्दर विद्यमान भगवान् की वाणी सुनने के लिए, यह जानने के लिए कि वे मुझसे क्या कहना चाहते हैं और यह सीखने के लिए कि मुझे क्या करना होगा, रात-दिन प्रतीक्षा करने लगा।" **श्रीअरविन्द**

पुराने अलीपुर में कोठरीनुमा जेल का वह कमरा जहाँ श्रीअरविन्द को रखा गया था।

मई

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

इस भाँति मनोभाव, बाहरी मनोभाव भी, बहुत महत्त्वपूर्ण है। लोग यह नहीं जानते कि श्रद्धा कितनी महत्त्वपूर्ण है, कितना बड़ा चमत्कार है, चमत्कारों को जन्म देने वाली है। अगर तुम यह आशा करते हो कि हर क्षण तुम्हें ऊपर उठाया जाये और भगवान् की ओर खींचा जाये, तो वे तुम्हें उठाने आयेंगे और वे बहुत निकट, निकटतर, सदैव निकट होंगे।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १३, पृ. ७९

जीवन का एक प्रयोजन है।

यह प्रयोजन है, भगवान् को खोजना और उनकी सेवा करना।

भगवान् दूर नहीं हैं, 'वे' हमारे अन्दर हैं, अन्दर गहराई में, भावनाओं और विचारों के ऊपर। भगवान् के साथ हैं शान्ति, निश्चिति और साथ ही सभी कठिनाइयों का समाधान।

अपनी समस्याएँ भगवान् को सौंप दो और 'वे' तुम्हें सभी कठिनाइयों से उबार लेंगे।

*

जीवन का एक प्रयोजन है—और वही एकमात्र सच्चा और स्थायी प्रयोजन है—भगवान्। 'उनकी' ओर मुड़ो तो रिक्तता चली जायेगी।

*

सुखी होने के लिए मत जियो। भगवान् की सेवा करने के लिए जियो, इससे तुम्हें जो आनन्द मिलेगा वह आशातीत होगा।

*

जो स्थायी, शाश्वत, अमर और अनन्त हो, वस्तुतः वही पाने-योग्य है, जीतने-योग्य है, अधिकृत करने-योग्य है। वह है 'दिव्य ज्योति', 'दिव्य प्रेम', 'दिव्य जीवन'—वह 'परम शान्ति', 'पूर्ण आनन्द' और धरती पर 'पूर्ण प्रभुत्व' भी है और इसका मुकुट है, 'पूर्ण भागवत अभिव्यक्ति'।

*

यह कभी न भूलो कि तुम अकेले नहीं हो। भगवान् तुम्हारे साथ हैं, तुम्हारी सहायता और तुम्हारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। 'वे' ऐसे साथी हैं जो कभी धोखा नहीं देते, ऐसे मित्र हैं जिनका प्रेम दिलासा देता और बल देता है। श्रद्धा रखो और वे तुम्हारे लिए सब कुछ कर देंगे।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ६, ७-८, ९, १०

२ जून १९०७ :

साप्ताहिक पत्रिका 'बन्दे मातरम्' का पहला अंक प्रकाशित हुआ।

२१ जून १९१३ :

'आर्य' पत्रिका प्रकाशित करने का निश्चय किया गया।

भगवान् के लिए प्रेम

वनस्पति-जगत् अपनी सबसे सुन्दर सम्भावनाओं को इकट्ठा करता है ताकि उन्हें भगवान् के अर्पण कर दे

गुलाब

(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)

जून

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

केवल भगवान् ही पूर्ण सुरक्षा दे सकते हैं।

*

प्रत्येक हृदय में 'भगवान् की उपस्थिति' भविष्य की और सम्भव पूर्णताओं की प्रतिज्ञा है।

*

हम केवल भगवान् में ही सम्पूर्ण शान्ति और पूर्ण सन्तोष पा सकते हैं।

*

चीज़ों की सतह के पीछे पूर्ण चेतना का एक सागर है जिसमें हम हमेशा डुबकी लगा सकते हैं।

*

एक ऐसी चेतना है जिसे कोई चीज़ भ्रष्ट, विकृत या दूषित नहीं कर सकती। यही वह चीज़ है जिसे हम 'भागवत चेतना' कहते हैं।

*

भगवान् के अन्दर, भगवान् के द्वारा सब कुछ रूपान्तरित और महिमान्वित हो जाता है। भगवान् के अन्दर सभी रहस्यों और शक्तियों की चाबी पायी जाती है।

*

हमारी सारी शक्ति भगवान् के साथ होने में है। उनके साथ हम सभी बाधाओं को पार कर सकते हैं।

*

भगवान् के शब्द आराम पहुँचाते और असीसते हैं, ठण्डक पहुँचाते और ज्योति प्रदान करते हैं और भगवान् के उदार हाथ उस परदे की एक तह को उठा देते हैं जो अनन्त ज्ञान को छिपाये हुए है।

*

भगवान् की महिमा पराजयों को शाश्वत की विजयों में बदल देती है, छायाएँ 'उनकी' प्रकाशमयी किरणों के सामने आते ही भाग खड़ी होती हैं।

*

भगवान् की उपस्थिति हमें शक्ति में शान्ति, कर्म में प्रशान्ति और सब परिस्थितियों के बीच अपरिवर्तनशील सुख देती है।

*

जुलाई १८९९ :

"Love and Death"—प्रेम और मृत्यु—लम्बी वर्णनात्मक कविता का लेखन सम्पन्न हुआ।

१८ मई १९०९ :

कलकत्ते के कॉलेज स्क्वैयर में भाषण दिया।

३१ जुलाई १९०९ :

"An open letter to My Countrymen"—मेरे देशविसियों के नाम एक खुला पत्र—*'कर्मयोगिन्'* में प्रकाशित हुआ। उसके बाद ब्रिटिश सरकार उन्हें निर्वासित करने के प्रयासों को फिर से हवा देने लगी।

केवल भगवान् के लिए जीना
इसका अर्थ है, वैयक्तिक जीवन की सभी कठिनाइयों को जीत लेना।
(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)
विलायती मेंहदी

जुलाई

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

भगवान् वह पक्के मित्र, वह 'शक्ति', वह 'सहारा' और वह 'मार्गदर्शक' हैं जो कभी धोखा नहीं देते, भगवान् वह 'प्रकाश' हैं जो अन्धकार को तितर-बितर कर देता है, वह विजेता हैं जो विजय को निश्चित बनाता है।

*

एकमात्र प्रत्युत्तर जो कभी निराश नहीं करता भगवान् का प्रत्युत्तर है।

एकमात्र प्रेम जो कभी निराश नहीं करता भगवान् का प्रेम है।

केवल भगवान् से प्रेम करो और भगवान् हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे।

*

अपने ही ऊपर एकाग्रता का अर्थ है क्षय और मृत्यु। केवल भगवान् पर एकाग्रता ही जीवन, विकास और उपलब्धि लाती है।

*

भगवान् के बिना जीवन एक दुःखद भ्रान्ति है, भगवान् साथ हों तो सब आनन्द ही आनन्द है।

*

'भागवत उपस्थिति' ही जीवन को मूल्य प्रदान करती है। यह 'उपस्थिति' समस्त शान्ति, समस्त आनन्द, समस्त सुरक्षा का स्रोत है। अपने अन्दर इस 'उपस्थिति' को पा लो तो तुम्हारी सभी कठिनाइयाँ ग़ायब हो जायेंगी।

*

हमारे समस्त विचार, हमारी सभी भावनाएँ, समस्त कार्य, सभी आशाएँ 'भगवान्' की ओर मुड़ी रहें और 'उन्हीं' पर केन्द्रित हों। 'वे' हमारी एकमात्र सहायता, हमारी एकमात्र सुरक्षा हैं।

*

कोई चीज़ 'भागवत चेतना' के साथ एक होने से बढ़ कर सुन्दर नहीं है।

यदि तुम पूरी सच्चाई के साथ खोजो तो तुम जिसे खोज रहे हो उसे अवश्य पाओगे, क्योंकि तुम जिसे खोज रहे हो वह तुम्हारे अन्दर ही है।

*

जिसे भगवान् के साथ ऐक्य प्राप्त है उसके लिए हर जगह भगवान् का पूर्ण सुख और आनन्द है। वह हर जगह और हर परिस्थिति में उसके साथ रहता है।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ११-१७, २०-२१

श्रीअरविन्द का जन्मदिवस

श्रीअरविन्द का जन्म १५ अगस्त १८७२ को कलकत्ते में हुआ। संयोगवश, १९४७ में उसी दिन भारत को अंग्रेज़ी शासन से मुक्ति मिली।

१९०७ : २ अगस्त, *बंगाल नैशनल कॉलेज* के प्रधानाचार्य-पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

२३ अगस्त : *बंगाल नैशनल कॉलेज* के विद्यार्थियों को भाषण दिया। सितम्बर में छूटने के बाद कॉलेज में प्रोफ़ेसर के पद पर पुनः प्रतिष्ठित हुए।

श्रीअरविन्द, १८८४

अगस्त

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

श्रद्धा

सबसे घने अन्धकार के दिनों में श्रद्धा ही सुनिश्चित पथ-प्रदर्शक है।

*

रात हमेशा आश्वासनों से भरी होती है। हमें पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ उसका सामना करना चाहिये।

*

हर क्षण सारा अप्रत्याशित, अनपेक्षित, अज्ञात हमारे सामने रहता है—और हमारे साथ जो कुछ होता है वह अधिकतर हमारी श्रद्धा की पवित्रता और तीव्रता पर निर्भर करता है।

*

अगर हमारे अन्दर सचमुच जीती-जागती श्रद्धा और भगवान् की सर्वसमर्थ शक्ति के लिए निरपेक्ष निश्चिति हो तो 'उनकी' अभिव्यक्ति इतनी प्रत्यक्ष हो सकती है कि उसके द्वारा समस्त धरती रूपान्तरित हो जाये।

अपरिवर्तनशील श्रद्धा बनाये रखो। 'सत्य' की विजय होगी।

भगवान् पर श्रद्धा रखो और अपने अन्दर गहरे जाओ। मेरी सहायता हमेशा तुम्हारे साथ है।

*

श्रद्धा रखो और चलते चलो।

*

हमारी सबसे बड़ी सहायता है—श्रद्धा। भगवान् सर्वदयामय हैं।

*

बालक के सरल विश्वास में बड़ी शक्ति होती है।

बालक के-से विश्वास के साथ हमारा हृदय भगवान् से प्रार्थना करता है।

*

कठिनाइयों का सामना करने के लिए सबसे अच्छा तरीक़ा है, 'भागवत कृपा' पर स्थिर, अचञ्चल विश्वास।

*

श्रद्धा और विश्वास बनाये रखो एवं प्रसन्न रहो।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ८७-८९

श्रीअरविन्द सोसायटी का शुभारम्भ **१९ सितम्बर १९६०** को श्रीमाँ ने किया था। वे न केवल इसकी संस्थापिका तथा कार्यकारी सभापति थीं, बल्कि हमेशा इसकी पथ-प्रदर्शिका भी रहीं। बहुत ही छोटे आरम्भ के साथ, बरसों की कड़ी मेहनत के बाद आज सोसायटी एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बन गयी है जो जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्यरत है।

श्रीअरविन्द सोसायटी,
पॉण्डिचेरी

सितम्बर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

भागवत कृपा

'परम प्रभु' ने संसार में अपनी 'कृपा' उसकी रक्षा करने के लिए भेजी है।

*

तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिये 'भागवत कृपा' के लिए—अगर न्याय अभिव्यक्त हो तो ऐसे लोग बहुत कम निकलेंगे जो उसके आगे ठहर सकें।

*

केवल 'भागवत कृपा' में ही वह शक्ति है जो 'वैश्व न्याय' के मार्ग में हस्तक्षेप कर सकती है और उसे बदल सकती है। अवतार का महान् कार्य है, 'भागवत कृपा' को धरती पर प्रकट करना। अवतार के शिष्य होने का अर्थ है, 'भागवत कृपा' का यन्त्र बनना। माता तादात्म्य द्वारा—वैश्व न्याय-तन्त्र के पूर्ण ज्ञान के साथ—तादात्म्य द्वारा 'भागवत कृपा' की महान् वितरक हैं।

और उनकी मध्यस्थता द्वारा भगवान् के प्रति सच्ची और विश्वासपूर्ण अभीप्सा की हर गति, उत्तरस्वरूप 'भागवत कृपा' के हस्तक्षेप को नीचे उतार लाती है।

हे प्रभु! कौन है जो तेरे सामने खड़ा होकर पूरी सच्चाई के साथ कह सके कि उसने कभी कोई भूल नहीं की। दिन में कितनी बार हम तेरे 'कार्य' के विरुद्ध अपराध करते हैं और हमेशा तेरी कृपा उन्हें मिटा देने के लिए आ जाती है।

'तेरी कृपा' के हस्तक्षेप के बिना हम बहुधा तेरे 'वैश्व न्याय के विधान' के अपरिहार्य खड्ग के नीचे आते।

*

'भागवत कृपा', 'तेरी' भलाई अनन्त है। हम 'तेरे' सम्मुख कृतज्ञता के साथ नमन करते हैं।

*

केवल 'भागवत कृपा' ही शान्ति, सुख, शक्ति, प्रकाश, ज्ञान, आनन्द और प्रेम को उनके सार और सत्य के साथ प्रदान कर सकती है।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ९०-९२

पूजा-दिवस : श्रीमाँ चार पूजा-दिवसों पर दर्शन दिया करती थीं।

महेश्वरी

महाकाली

महालक्ष्मी

महासरस्वती

अक्तूबर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

'भागवत कृपा' सबके लिए समान रूप से है, लेकिन हर एक उसे अपनी सच्चाई के अनुसार पाता है। वह बाहरी परिस्थितियों पर नहीं, सच्ची अभीप्सा और उद्घाटन पर निर्भर होती है।

*

जब भी सच्चाई और सद्भावना होती है, 'भगवान्' की सहायता भी वहाँ रहती है।

अपने समर्पण में हमेशा अनन्य भाव से रहो और अपनी अभीप्सा में सच्चे निष्कपट, और तुम हमेशा भगवान् की सहायता और उनके पथ-प्रदर्शन की उपस्थिति का अनुभव करोगे।

*

भगवान् की सहायता हो तो कुछ भी असम्भव नहीं है।

भगवान् की सहायता के बिना किसी के लिए भी साधना सम्भव न होगी। लेकिन सहायता हमेशा मौजूद है।

*

भगवान् की कृपा पर अटल श्रद्धा रखो।

'भागवत कृपा' हमेशा तुम्हारे साथ है। नीरव मन से अपने हृदय में एकाग्र होओ और निश्चय ही तुम उस पथ-प्रदर्शन और सहायता को पा लोगे जिसके लिए तुम अभीप्सा करते हो।

*

उन सबके लिए 'कृपा' और सहायता हमेशा मौजूद रहती हैं जो इनके लिए अभीप्सा करते हैं और जब इन्हें श्रद्धा और विश्वास के साथ ग्रहण किया जाये तो इनकी शक्ति असीम होती है।

*

'भागवत कृपा' कार्य करने के लिए हमेशा मौजूद है, लेकिन तुम्हें उसे कार्य करने देना चाहिये, उसकी क्रिया का प्रतिरोध नहीं करना चाहिये। एकमात्र आवश्यक शर्त है श्रद्धा। जब तुम्हें लगे कि आक्रमण हो रहा है तो सहायता के लिए श्रीअरविन्द को और मुझे पुकारो। अगर तुम्हारी पुकार सच्ची है (यानी, अगर तुम सचमुच स्वस्थ होना चाहते हो) तो पुकार को उत्तर मिलेगा और 'भागवत कृपा' तुम्हें स्वस्थ बना देगी।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ९३-९५

२४ नवम्बर १९२६–महान् आध्यात्मिक उपलब्धि के बाद श्रीअरविन्द ने सार्वजनिक तौर पर इस दिन से मिलना-जुलना पूरी तरह से बन्द कर दिया ताकि वे अपना आध्यात्मिक कार्य निर्बाध जारी रख सकें। इस समय उन्होंने आश्रमवासियों के बाहरी और आन्तरिक जीवन तथा आश्रम की समस्त ज़िम्मेवारी अपनी आध्यात्मिक सहयोगी "श्रीमाँ" को, जो पहले मीरा अलफ़ासा (Mirra Alfassa) के नाम से जानी जाती थीं, सौंप दी। अतः, यह दिन सामान्यतः आश्रम के स्थापना-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

१७ नवम्बर—श्रीमाँ के पार्थिव शरीर का त्याग

रूपान्तर
सृष्टि का लक्ष्य
(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)
आकाश नीम

२० नवम्बर—श्रीमाँ का महासमाधि-दिवस

२४ नवम्बर १९२६—सिद्धि दिवस (विजय दिवस) कृष्ण का—अधिमानस देवता—भौतिक में अवतरण।

नवम्बर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

हाँ, 'भागवत कृपा' में श्रद्धा हमेशा उसका हस्तक्षेप लाती है।

*

'भागवत कृपा' की क्रिया सम्पूर्ण और सर्वांगीण परिणाम लाये इसके लिए श्रद्धा को **सम्पूर्ण** और **सर्वांगीण** होना चाहिये।

*

'भागवत कृपा' हमें कभी निराश नहीं करेगी—हमें यह श्रद्धा अपने हृदय में निरन्तर बनाये रखनी चाहिये।

हमारे अन्दर श्रद्धा का अभाव ही हमारी सीमाओं की रचना करता है।

*

'भागवत कृपा' हमारे साथ है और हमें कभी नहीं छोड़ती—तब भी नहीं जब सब कुछ अन्धकारमय प्रतीत होता है।

*

परम प्रभु की शक्ति अनन्त है—यह तो हमारी श्रद्धा ही है जो सीमित है।

*

हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण, सभी अवस्थाओं में 'भागवत कृपा' हमें सभी कठिनाइयों को पार कराने में हमारी सहायता के लिए मौजूद है।

*

असफलता और सफलता दोनों में 'दिव्य कृपा' हमेशा मौजूद रहती है।

*

तुम भगवान् के जितना अधिक निकट आओगे उतना ही अधिक तुम 'उनकी' असीम 'कृपा' के अत्यधिक स्पष्ट प्रमाणों की फुहार में निवास करोगे।

*

अन्तिम विश्लेषण में, 'भागवत कृपा' में पूर्ण श्रद्धा और विश्वास ही 'परम प्रज्ञा' है।

*

इस प्रत्यक्ष अस्तव्यस्तता में से एक नयी और अधिक अच्छी व्यवस्था रूप ले रही है। लेकिन उसे देखने के लिए तुम्हारे अन्दर 'भागवत कृपा' में श्रद्धा होनी चाहिये। हिम्मत बनाये रहो।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ९६-९८

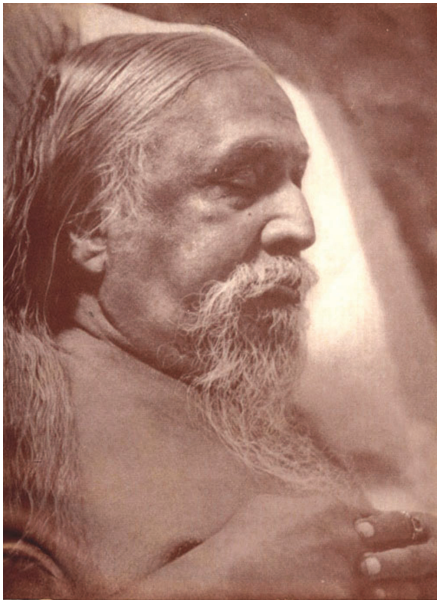

९ दिसम्बर
श्रीअरविन्द का शरीर समाधिस्थ किया जा रहा है।

५ दिसम्बर—श्रीअरविन्द के पार्थिव शरीर का त्याग

९ दिसम्बर—श्रीअरविन्द का महासमाधि-दिवस

शरीर एक गुलाबी आभा से दमकता रहा और १०० घण्टों तक विकार का कोई पुट उसमें नज़र नहीं आया।

दिसम्बर

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

वर्तमान बढ़ते हुए संघर्ष में हमारी वृत्ति कैसी होनी चाहिये?
'भागवत कृपा' में श्रद्धा और पूर्ण विश्वास।

*

जब सब कुछ खोया हुआ प्रतीत होता है तभी सब कुछ बचाया जा सकता है। जब तुम अपनी निजी शक्तियों पर विश्वास खो बैठते हो, तब तुम्हें भागवत कृपा पर विश्वास रखना चाहिये।

*

अन्तिम निष्कर्ष यही निकलता है कि सब कुछ सचमुच 'भागवत कृपा' पर निर्भर है और हमें भविष्य की ओर विश्वास और प्रसन्नता के साथ देखना चाहिये, साथ-ही-साथ यथासम्भव जल्दी-से-जल्दी प्रगति करनी चाहिये।

*

आओ, हम अपनी इच्छा-शक्ति 'भागवत कृपा' के अर्पण कर दें। 'भागवत कृपा' ही सब कुछ पूरा करती है।

*

'भागवत कृपा' : केवल 'भागवत कृपा' कार्य कर सकती है। वही मार्ग खोल सकती है, वही चमत्कार कर सकती है।

*

'भागवत कृपा' में पूरी श्रद्धा रखो। वही सब चमत्कारों को करती है।

*

हमें केवल 'भागवत कृपा' पर निर्भर रहना और सभी परिस्थितियों में उसे ही बुलाना सीखना चाहिये। तब वह सतत चमत्कार करती रहेगी।

*

यात्रा चाहे जितनी लम्बी हो और यात्री चाहे जितना महान्, अन्त में ज़रूरत होती है 'भागवत कृपा' पर ऐकान्तिक सतत निर्भरता की।

*

केवल 'भागवत कृपा' ही हमारा सहारा होगी।

*

जो सच्चाई के साथ 'भागवत कृपा' पर भरोसा करता है उसके लिए कृपा अनन्त है।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ९८-१००

'भागवत कृपा' हमेशा तुम्हारे साथ रहती है और अपने भरोसे के द्वारा तुम उसकी क्रियाओं को प्रभावकारी होने देते हो।

*

'भागवत कृपा' पर हमारे भरोसे के अनुपात में ही 'भागवत कृपा' हमारे लिए कार्य कर सकती और हमारी सहायता कर सकती है।

*

भगवान् पर हमारा भरोसा बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होना चाहिये।

*

'भागवत कृपा' पर भरोसे से सभी बाधाओं को पार किया जा सकता है।

*

जब हम भगवान् की कृपा पर भरोसा करते हैं तो हमें अचूक साहस मिलता है।

भगवान् पर भरोसा
आवेशमय प्राण के लिए बहुत ही अनिवार्य
(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)
लवणवल्ली

*

'भागवत कृपा' पर पूरा भरोसा रखो, 'भागवत कृपा' सब तरह से तुम्हारी सहायता करेगी।

*

उस बालक की तरह जो तर्क नहीं करता और जिसे कोई चिन्ता नहीं है, अपने-आपको भगवान् के हाथों में सौंप दो ताकि 'उनकी' इच्छा पूरी हो।

*

चाहे कुछ क्यों न हो, हमें शान्त रहना चाहिये और भगवान् की कृपा पर भरोसा रखना चाहिये। **'श्रीमातृवाणी'**, खण्ड १४, पृ. १००-०२

भागवत कृपा

तेरी दयालुता अपरम्पार है।
कृतज्ञतापूर्वक हम तेरे सम्मुख
नमन करते हैं
(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)

कपास गुलाब

किसी चीज़ की तुलना उस शान्ति के साथ नहीं की जा सकती जो 'कृपा' पर पूरा-पूरा भरोसा करने से आती है।

सारी चिन्ता, जिसमें प्रगति की चिन्ता भी शामिल है, 'भागवत कृपा' पर छोड़ दो, और तुम शान्ति से रहोगे।

*

व्यक्ति जितना अधिक जानता जाता है, उतना ही अधिक अनुभव करता जाता है कि वह कुछ नहीं जानता।

जिसे भगवान् पर, 'उनकी' प्रज्ञा और दया पर पूर्ण विश्वास है, उसके लिए कोई समस्या नहीं रह जाती।

*

भगवान् की विजय **निश्चित** है। अगर हम **सच्चा** भरोसा रखें तो कभी ग़लत रास्ता न लेंगे।

*

केवल 'भागवत कृपा' में अविचल विश्वास और श्रद्धा के साथ पूरी तरह से शान्त और निश्चल बने रहने से ही तुम परिस्थितियों को यथासम्भव अच्छे-से-अच्छा पा सकते हो। उन लोगों के लिए **हमेशा अच्छे-से-अच्छा होता है** जो 'भगवान्' और केवल 'भगवान्' पर ही पूरा भरोसा रखते हैं।

*

जब कभी, अपने जीवन में तुम्हें संकट का सामना करना पड़े तो उसे प्रभु की कृपा के वरदान के रूप में लो और वह वही बन जायेगा।

*

किसी भी अवस्था में और जो कुछ भी घटे, घटनाओं को उस 'भागवत कृपा' के उपहार के रूप में लो जो तुम्हें शीघ्रगामी मार्गों से तुम्हारे जीवन के आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर ले जा रही है।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. १०२-०४

बहरहाल, सचमुच प्रभावशाली, एकमात्र चीज़ यही है कि जो भगवान् की इच्छा हो उसी की इच्छा करो और 'भागवत कृपा' की परम अनुकम्पा पर अचल-अटल विश्वास रखो, क्योंकि उसके द्वारा हमेशा अच्छे-से-अच्छा ही होता है; परन्तु वह अच्छे-से-अच्छा मानव विचारों के अनुसार नहीं, 'परम सत्य' के अनुसार अच्छे-से-अच्छा होता है।

ठोस, शुद्ध श्रद्धा से भरपूर और शान्त रहो।

*

करने-लायक़ चीज़ एक ही है कि तुम जिन अवस्थाओं में हो उन्हें यह जानते हुए शान्ति के साथ स्वीकार कर लो कि जिसमें भगवान् के प्रति श्रद्धा होती है उसके लिए जो कुछ होता है, हमेशा उत्तम होता है। भगवान् नहीं चाहते कि मनुष्य दुःख भोगें, लेकिन अपने अज्ञान में मनुष्य इस तरह प्रतिक्रिया करते हैं कि वे अपने ऊपर दुःख ले आते हैं। शान्ति, नीरवता, और समर्पण में ही एकमात्र समाधान है।

*

सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि तुम क्या चाहते हो। अगर तुम योग चाहते हो, तो **जो कुछ** होता है उसे 'भागवत कृपा' के रूप में लो जो तुम्हें तुम्हारे लक्ष्य की ओर ले जा रही है और परिस्थितियाँ जो पाठ सिखाती हैं उसे समझने की कोशिश करो।

*

जिन्होंने अपने-आपको भगवान् को दे दिया है उनके सामने आने वाली हर कठिनाई नयी प्रगति का आश्वासन होती है और इसलिए उसे 'भागवत कृपा' के उपहार के रूप में लेना चाहिये।

*

लोग यह मानते हैं कि 'भागवत कृपा' का अर्थ है तुम्हारे सारे जीवन के लिए चीज़ों को सरल बना देना। यह सच नहीं है।

'भागवत कृपा' तुम्हारी अभीप्सा को चरितार्थ करने के लिए कार्य करती है और सबसे अधिक तत्पर और तेज़ चरितार्थता प्राप्त करने के लिए हर एक चीज़ व्यवस्थित की गयी है।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. १०४-०६

हमारी एकमात्र अभीप्सा आध्यात्मिक प्रगति के लिए होनी चाहिये। केवल उसी के लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिये।

दृढ़ता के साथ अपनी अभीप्सा को बढ़ाओ। भगवान् के प्रति अपने उत्सर्ग को पूर्ण बनाने की चेष्टा करो और तुम्हारे लिए तुम्हारे जीवन की व्यवस्था कर दी जायेगी।

*

'भागवत कृपा' ऐसी चीज़ है जो तुम्हें उस लक्ष्य की ओर धकेलती है जिसे तुम्हें पाना है। उसका निर्णय अपने मन से न करो, तुम कहीं न पहुँच पाओगे, क्योंकि यह एक दुर्ज्ञेय चीज़ है जो मानवीय शब्दों या भावनाओं द्वारा नहीं समझायी जा सकती। जब 'भागवत कृपा' कार्य करती है, तो परिणाम सुखद हो भी सकते हैं और नहीं भी—वह किसी मानवीय मूल्य की परवाह नहीं करती, सामान्य और ऊपरी दृष्टिकोण से वह विध्वंस भी हो सकता है। लेकिन यह व्यक्ति के लिए हमेशा उत्तम होता है। वह 'भगवान्' के द्वारा भेजा प्रहार होता है ताकि प्रगति दिन दूनी रात चौगुनी हो सके। 'भागवत कृपा' ही तुम्हें सिद्धि के पथ पर तेज़ी से चलाती है।

*

हमें इस एक बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि—जो कुछ होता है ठीक वही होता है जो हमें और संसार को यथासम्भव जल्दी-से-जल्दी लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए होना चाहिये और वह लक्ष्य है, भगवान् के साथ सायुज्य और अन्ततः 'उनकी' अभिव्यक्ति।

और यह श्रद्धा—निष्कपट और सतत श्रद्धा—एक ही साथ हमारी सहायता भी है और सुरक्षा भी।

*

हमारे साहस और हमारी सहनशीलता को हमारी आशा के जितना ही महान् होना चाहिये और हमारी आशा की कोई सीमा नहीं।।

स्थिर आशा मार्ग में बहुत सहायता देती है।

*

हमारी आशाएँ कभी इतनी बड़ी नहीं होतीं कि वे अभिव्यक्त न हो सकें। हम किसी ऐसी चीज़ की कल्पना ही नहीं कर सकते, जो हो न सके।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. ८३, १०६, १९३

मेरे कहने का मतलब यह था कि जीवन हमेशा कठिनाइयों, संकटों और दुःखों से भरा होता है। यह एक सामान्य तथ्य है और हर एक को उनमें से अपने हिस्से का सामना करना पड़ता है। उनका सामना करने का एक ही सही तरीक़ा है : टिके रहना और अपनी रुचि, आशा और श्रद्धा को आन्तरिक जीवन और भगवान् की ओर अभिमुख चेतना में बनाये रखना जो भगवान् के लिए अभीप्सा करती हो और भगवान् की 'शक्ति' तथा 'सहायता' को ग्रहण करने-योग्य हो। लेकिन प्रायः प्राणिक सत्ता या उसका कोई भाग हर एक कठिनाई को नाटकीय महत्त्व देने में विकृत रस लेने लगता है और इस तरह आन्तरिक सत्ता और 'भगवान् की शक्ति' से सम्बन्ध काट देता है।

*

भगवान् की भुजाओं में आश्रय लेने से सभी कठिनाइयों का समाधान हो जाता है क्योंकि ये प्रेमभरी भुजाएँ हमें शरण देने के लिए हमेशा फैली रहती हैं।

*

जब सब कुछ उलटा हो रहा हो तो यह याद रखना आना चाहिये कि भगवान् सर्वशक्तिमान् हैं।

*

भगवान् हमारे बीच उपस्थित हैं। जब हम 'उन्हें' हमेशा याद करते हैं तो 'वे' हमें सब परिस्थितियों का पूर्ण शान्ति और समचित्तता के साथ सामना करने का बल प्रदान करते हैं। 'उपस्थिति' के बारे में सचेत होओ तो तुम्हारी कठिनाइयाँ ग़ायब हो जायेंगी।

*

भगवान् के प्रति सतत अभीप्सा के साथ अन्तर में निवास करना—हमें जीवन को मुस्कान के साथ देखने और बाहरी परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों उनमें शान्त रहने में समर्थ बनाता है।

*

अन्तर में निवास करो, बाहरी परिस्थितियों से विचलित न होओ।

*

केवल भगवान् के लिए जीनाः इसका अर्थ है, व्यक्तिगत जीवन की सभी कठिनाइयों पर विजय पा लेना।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. २५५, २५६-५७

जीवन की छोटी-मोटी घटनाओं को बहुत ज़्यादा महत्त्व न दो।

इन घटनाओं का महत्त्व इसमें है कि उन्होंने प्रगति करने में तुम्हारी किस हद तक सहायता की है। और एक बार प्रगति हो जाये तो पिछली भूलों के परिणाम, यदि कोई परिणाम हैं तो भागवत कृपा के हस्तक्षेप से ग़ायब हो जाते हैं।

*

अयोग्यता के ये विचार वाहियात हैं, ये प्रगति के सत्य का निषेध हैं —अगर अभीप्सा बनी रहे तो जो आज नहीं किया जा सकता वह किसी और दिन किया जायेगा।

*

चीज़ें भले वैसी न हों जैसी होनी चाहियें, लेकिन चिन्ता उन्हें सुधारने में सहायता नहीं करती। निश्चल विश्वास बल का स्रोत है।

*

भूतकाल के बारे में सोचते रहना बिलकुल ग़लत है। सच्ची वृत्ति यह है कि यह याद रखो कि भगवान् की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता और चुपचाप उसके आगे झुक जाओ। अगर भूतकाल में तुमने भूलें की हैं तो वे सच्चे समर्पण के अभाव के कारण थीं और भूलों को सुधारने का एकमात्र तरीक़ा है, सच्चाई के साथ समर्पण करना।

*

डर की **कोई बात** नहीं है—सब कुछ 'परम प्रभु' हैं—'परम प्रभु' के सिवाय और **कुछ** नहीं है; एकमात्र भगवान् का ही अस्तित्व है और जो कुछ हमें डराने की कोशिश करता है वह केवल भगवान् का मूर्खतापूर्ण और अर्थहीन छद्मवेश है। हिम्मत रखो—तुम्हारे सामने मार्ग खुला है, बीमारी की इस मोहग्रस्तता को झाड़ फेंको और 'भागवत शान्ति' को नीचे उतारो। तब सब कुछ ठीक हो जायेगा। प्रेम और आशीर्वाद सहित।

*

तुमसे मुझे यह कहना है : दुःख को दुलारो मत और दुःख तुम्हें पूरी तरह छोड़ देगा। प्रगति के लिए दुःख अनिवार्य बिलकुल नहीं है। सबसे महान् प्रगति स्थिर और प्रसन्नतापूर्ण समचित्तता में की जाती है।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. २५८, २६०-६१, २६८, २७३

भागवत मुस्कान

अपने अहंकार पर विजय पाकर ही हम भगवान् की मुस्कानों पर ध्यान लगा सकते हैं

(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)

चम्पा

मुस्कुराना सीखो

हमेशा सभी परिस्थितियों में मुस्कुराना सीखो; अपने दुःखों और सुखों पर, अपनी पीड़ाओं और अपनी आशाओं पर मुस्कुराना सीखो, क्योंकि मुस्कान में आत्म-संयम की परम शक्ति है।

*

मधुरता स्वयं शक्तिशाली तब बनती है जब भगवान् की सेवा में लगी हो।

*

मुस्कान कठिनाइयों पर वही क्रिया करती है जो सूर्य बादलों पर—वह उन्हें छिन्न-भिन्न कर देती है।

*

मुझे नहीं लगता कि कोई ज़रूरत से ज़्यादा मुस्कुरा सकता है। जो व्यक्ति सभी परिस्थितियों में मुस्कुराना जानता है, वह अन्तरात्मा की सच्ची समता के बहुत निकट है।

*

सामान्य रूप से कहें तो मनुष्य एक पशु है जो अपने-आपको अतिशय गम्भीरता के साथ लेता है। सभी परिस्थितियों में अपने ऊपर मुस्कुराना जानना, अपने दुःखों और मोह-भंगों, महत्त्वाकांक्षाओं और पीड़ाओं, अपने तिरस्कार और विद्रोह पर मुस्कुरा सकना—यह स्वयं अपने ऊपर विजय पाने के लिए कितना सशक्त अस्त्र है!

*

अगर तुम जीवन पर सदा मुस्कुरा सको तो जीवन भी सदा तुम पर मुस्कुरायेगा।

*

अगर कोई सदा मुस्कुरा सके तो वह सदा युवा रहता है।

*

प्रसन्नतापूर्ण मन और शान्त हृदय रखो। कोई भी चीज़ तुम्हारी समचित्तता को डिगा न पाये। हर रोज़ लक्ष्य की ओर स्थिरता से मेरे साथ बढ़ने के लिए आवश्यक प्रगति करो।

'श्रीमातृवाणी', खण्ड १४, पृ. १९६-९८

दैनन्दिनी

जनवरी

१. जीने-योग्य वस्तु केवल एक ही है—भगवान् की सेवा।

२. हम अपनी सत्ता का निजी मोक्ष नहीं बल्कि भगवान् के प्रति अपनी सत्ता का पूर्ण समर्पण चाहते हैं।

३. जिस क्षण तुम आगे बढ़ना बन्द कर देते हो उसी क्षण नीचे गिर जाते हो।

४. सच्ची आध्यात्मिकता जीवन का त्याग नहीं बल्कि भागवत पूर्णता के साथ जीवन को पूर्ण बनाना है।

५. प्राप्त करने-योग्य सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़—'दिव्य जीवन' को समझना।

६. भगवान् में जीना और दिव्य चेतना को पाना अपने-आपमें अमरता है।

७. अगर तुम अपनी कामनाओं के स्वामी नहीं हो, तो तुम अपने विचारों के स्वामी नहीं हो सकते।

८. प्रेम सभी के साथ है, समान रूप से हर एक की प्रगति के लिए काम कर रहा है—लेकिन यह विजयी उन्हीं में होता है जो इसकी परवाह करते हैं।

९. एक दिन में कोई अपने स्वभाव पर विजय नहीं पाता। लेकिन धैर्यपूर्ण और सहनशील संकल्प द्वारा 'विजय' निश्चित होती है।

१०. जानना और सहन कर सकना और डटे रह सकना, ये चीज़ें निःसन्देह अचल-अटल आनन्द लाती हैं।

११. जगत् की वर्तमान अवस्था में भगवान् के प्रति पूरी-पूरी निष्ठा अनिवार्य आवश्यकता बन गयी है।

१२. अपनी अन्तरात्मा का आदेश मानो, केवल उसे ही तुम्हारे जीवन पर शासन करने का अधिकार है।

१३. मनुष्य को दिखावा नहीं करना चाहिये, उसे होना चाहिये; मनुष्य को पूर्ण, सच्चा होना चाहिये और अपनी कामनाओं को सुन्दर सिद्धान्तों के द्वारा ढकना नहीं चाहिये।

१४. सच्चा रूपान्तर चेतना का रूपान्तर है—बाक़ी सब चीज़ें उसके बाद

अपने-आप आयेंगी।

१५. सत्य में निवास करने वाला सभी विरोधों के ऊपर होता है।

१६. स्वाधीनता बाहरी परिस्थितियों से नहीं, आन्तरिक मुक्ति से आती है।

१७. अपनी अन्तरात्मा को खोजो, उसके साथ एक होओ, उसे अपने जीवन पर शासन करने दो तो तुम **स्वाधीन** हो जाओगे।

१८. प्रसन्न रहो मेरे वत्स, प्रगति का यह सबसे अधिक निश्चित मार्ग है।

१९. सभी रायों में कुछ सत्य होता है और कुछ असत्य। वस्तुतः क्रोध किये बिना औरों की राय सुनना एक बड़ी और उपयोगी चीज़ है।

२०. जब हम विचलित नहीं होते तभी उचित समय पर उचित ढंग से उचित काम कर पाते हैं।

२१. पीड़ा को अस्वीकार कर दो, हर ऐसी गति को अस्वीकार कर दो जो तुम्हें माँ से दूर ले जाती है। बिना कोई माँग या प्रश्न किये, पूरी श्रद्धा के साथ उनसे चिपके रहो। **श्रीअरविन्द**

२२. अहंकार ही नाराज़ और बेचैन हो उठता है और यही अहंकार तुम्हारी चेतना को धुँधला बनाता और तुम्हारी प्रगति में बाधा डालता है।

२३. अपने-आपको धोखा देने की ज़रा-सी वृत्ति सफलता को असम्भव बना देती है।

२४. तुम्हें धीरज या साहस न खोना चाहिये, सब कुछ ठीक हो जायेगा।

२५. किसी चीज़ के लिए इच्छा न करो। हर क्षण अपनी शक्यता के अनुसार ऊँचे-से-ऊँचे स्तर पर रहो।

२६. निश्चित रूप से डर रास्ते की सबसे बड़ी बाधा है।

२७. निरर्थक बातों में अपनी शक्ति नष्ट मत करो।

२८. अगर तुम दुनिया को बदलना चाहते हो तो अपने-आपको बदलो।

२९. तुम्हारी उच्चतम अवस्था तुम्हारे जीवन को व्यवस्थित करे। हमेशा अच्छे बने रहो तो तुम हमेशा ख़ुश रहोगे।

३०. हे मेरे स्वामी! तेरी सहायता और कृपा के रहते डर की क्या बात है! परम प्रभु ने अपनी कृपा को जगत् में उसे उबारने के लिए भेजा है।

३१. श्रीअरविन्द ने बहुत बार लिखा है कि मनुष्य अपने दुःख से, अपनी तुच्छता से, अपनी दुर्बलता से, अपने अज्ञान और अपनी सीमाओं से चिपका रहता है—इसी कारण वह बदल नहीं पाता।

'दिव्य शरीर में दिव्य जीवन'

भागवत चेतना में रहना

जब तुम भगवान् की चेतना में रहना शुरू करते हो तो भौतिक जीवन और उसकी चीज़ें भी बदलना शुरू करती हैं। सामान्य चेतना में तुम अपने जीवन को कभी पूर्णतः व्यवस्थित नहीं कर सकते। तुमको चुनना होता है कि तुम क्या चाहते हो, अपने जीवन को मानसिक तरीक़े से व्यवस्थित करना चाहते हो या यह चाहते हो कि मन से परे की चेतना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करे। जब तुम जीवन को उच्चतर चेतना से व्यवस्थित करना चाहते हो तो घटनाएँ भिन्न गुण धारण कर लेती हैं। तुम चेतना के विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट भेद देख सकते हो और तुम्हारे लिए उच्चतर नियति लागू होने लगती है। एक बार तुम योगाभ्यास शुरू कर दो और अपने-आपको किसी कठिन स्थिति में पाओ तो एकाग्र होकर अपनी कठिनाई भगवान् के सामने रख दो। अचानक बिजली की कौंध की तरह तुम पथ-प्रदर्शन पा लोगे। यह करो और तुम देखोगे कि हर चीज़ बदल रही है। सन्देह करने वाला मन पूछता है कि अगर तुमने ध्यान न किया होता तो भी क्या उच्चतर स्तर से वही कौंध आती? तुम बस यही कह सकते हो कि भगवान् ने तुमसे ध्यान करवाया। उन्होंने तुमको यह अनुभूति प्रदान की और चूँकि तुम चेतना के उच्च स्तर पर थे इसलिए वह कौंध आयी थी, वह पूर्व-निश्चित न थी।

उच्चतर चेतना के स्तर से पथ-प्रदर्शन पाकर तुम ज़्यादा अच्छा जीवन जीते हो। अगर तुम आध्यात्मिक और भौतिक के बीच एक दीवार खड़ी कर दो तो चुनाव बहुत कठिन होगा।... परन्तु यह चुनाव तो करना ही होगा कि तुम चेतना के किस स्तर पर रहना चाहते हो? अगर *गीता* के गुणातीत में या गुणों के परे जाने से तुम्हारे जीवन में एक नयी नियति न आये तो उसका कोई अर्थ न होगा। अगर तुम सचमुच श्रीअरविन्द के योग का अभ्यास करना चाहते हो तो तुम्हें हमेशा चेतना के उच्चतम स्तर पर रहना चाहिये, यहाँ तक कि खाते वक़्त, सोते वक़्त—सारे समय। और फिर तुम उस उच्चतम चेतना को सारे समय अपने द्वारा अभिव्यक्त होने दो। तब तुम विश्वास के साथ जीवन में से गुज़र सकोगे।

(क्रमशः)

—नवजातजी

प्रेम कितना महान् है!

एक समय की बात है, एक टापू था जहाँ सब प्रकार के मनोभाव रहते थे, प्रसन्नता, दुःख, ज्ञान तथा अन्य सब, जिनमें प्रेम भी था। एक बार घोषणा की गयी कि टापू डूब जायेगा। सबने अपनी-अपनी नौकाएँ ठीक-ठाक कीं और चल पड़े। प्रेम अकेला बच रहा। प्रेम, सम्भव हो तो, अन्तिम क्षण तक बना रहना चाहता था। जब टापू डूबने को हुआ तो प्रेम ने सहायता माँगने का निश्चय किया।

समृद्धि अपनी भव्य नौका में प्रेम के पास से होकर गुज़र रही थी। प्रेम ने पूछा, "समृद्धि, तुम मुझे अपने साथ ले चलोगी?" समृद्धि ने कहा, "नहीं, मेरे लिए सम्भव नहीं है। मेरी नौका में बहुत सोना-चाँदी है, यहाँ तुम्हारे लिए स्थान नहीं है, मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती।"

प्रेम ने निश्चय किया कि वह अहम्मन्यता से पूछेगा जो उसके पास ही से अपनी सुन्दर नौका में गुज़र रही थी। वह बोला, "अहम्मन्यता, कृपया मुझे ले चलो!" उसने कहा, "प्रेम, तुम पूरी तरह से गीले हो, तुम्हारे बैठने से मेरी नौका बिगड़ जायेगी, मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती।" दुःख पास ही था, प्रेम ने उससे भी सहायता माँगी, "हे दुःख, कृपया मुझे अपने साथ ले चलो।" दुःख ने कहा, 'ओह प्रेम... मैं बहुत उदास हूँ, मुझे मेरे हवाले छोड़ दो!"

ख़ुशी भी उधर से गुज़री परन्तु वह इतनी ख़ुश थी कि उसने प्रेम की पुकार भी न सुनी! अचानक एक आवाज़ सुनायी दी, "प्रेम आओ, मैं तुम्हें ले चलूँ।" वे कोई बुज़ुर्ग थे। प्रेम धन्यता से इतना भर उठा कि वह उनका नाम पूछना भी भूल गया। जब वे सूखी ज़मीन पर आ पहुँचे, वे बुज़ुर्ग अपनी राह हो लिये। प्रेम ने अनुभव किया, अरे, मैं उनका कितना ऋणी हूँ और उसने पास खड़े ज्ञान से पूछा, "मेरी सहायता किसने की?"

ज्ञान ने उत्तर दिया, "समय" ने। प्रेम ने पूछा, "परन्तु काल या समय ने मेरी सहायता क्यों की?" ज्ञान ने मुस्कुरा कर कहा, "क्योंकि काल या समय समझ सकता है कि प्रेम कितना महान् है!"

—'अवेकनिंग' से साभार

बालक-जैसा बनने की आशा

बालक-जैसा बड़भागी कौन? उसके सामने राजा-महाराजाओं की क्या गिनती? निश्चिन्त, आनन्द-मग्न, कल्लोल पर आरोहण कर जब एक स्वर्ग से दूसरे सुखमय स्वर्ग में शिशु-सम्राट् की सवारी जाती है तब देखने वाले बड़े-बड़े देवताओं के हृदय में भी ईर्ष्या का भाव जग जाता है। न किसी की परवाह, न किसी का डर। स्वतन्त्र और निर्भय बाल-हृदय स्वयं बहलता है और सबको बहलाता है।

बालक है प्रभु की बगिया का अद्‌भुत फूल! अपने निर्मल दलों को प्रफुल्लित रखने वाला आत्मा का फूल! उसकी अन्तरात्मा के अनुपम सौन्दर्य की लहरी जहाँ-जहाँ फैलती है वहाँ-वहाँ उसका स्पर्श पाने वाले सब मुग्ध हो जाते हैं। उसके अन्तर से निकलने वाले स्वर्गीय सुवास से सारा वातावरण अत्यन्त अद्‌भुत बन जाता है।

बालपन है जीवन का उषा काल, सुवर्ण सौन्दर्य की मंगल लीला, ज्ञान की मधुर-मनोहर सहज सुरावली, कवियों की कमनीय कविता, कलाकार की कल्पना की रेखा और रंग में विलसती रमणीय रूप-ज्योति!

बालक का हृदय है—प्रभु-दत्त पवित्रता का परम धाम, शुभ्र स्फटिक मणि से रचित मंगल-मन्दिर। प्रसन्नवदन परमात्मा उस मन्दिर में सदैव विराजमान रहते हैं, बाल-सुख से अपनी कृपा की हँसी सदा सबके लिए बहाया करते हैं। बालस्मिति है प्रभु का वरदान। उसे पाने वाले धन्य हो जाते हैं। बालात्मा है परमात्मा का पुत्र, लीलामयी का लाड़ला। वह जन्म से ही है दिव्यता का दावा करने वाला।

परमेश्वर का प्रासाद देवों के लिए बन्द है। दानव तो उसे देख भी नहीं सकते। तपस्वियों का प्रभाव वहाँ नहीं पहुँच पाता। जप-तप का वहाँ कुछ भी नहीं चलता। पर बालक को भला कौन रोके? उसके रुनझुन चरणों के सञ्चार के लिए सब मंगल मार्ग खुले रहते हैं। प्रभु-धाम का बन्द रहने वाला दरवाज़ा बाल-चरण का घुँघरू बजते ही तुरत खुल जाता है।

बालक! बालक! आ जा, हमारे हृदय से लग जा। तेरे साथ रहने से हम भी तेरे जैसे बालक बन जायें और तेरे साथ भगवान् की गोद में अधिकारी बन अमृतपान करें। —पूजालाल जी

मैं आ रहा हूँ!

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे
गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ।
अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा
अरुण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।

कल्पना में आज तक उड़ते रहे तुम
साधना से सिहर कर मुड़ते रहे तुम
अब तुम्हें आकाश में उड़ने न दूँगा
आज धरती पर बसाने आ रहा हूँ।

सुख नहीं यह नींद में सपने सँजोना
दुःख नहीं यह सीस पर गुरुभार ढोना
शूल तुम जिसको समझते थे अभी तक
फूल मैं उनको बनाने आ रहा हूँ।

देख कर मँझधार में घबड़ा न जाना
हाथ ले पतवार को मत छोड़ देना
मैं किनारे पर तुम्हें थकने न दूँगा
पार मैं तुमको लगाने आ रहा हूँ।

तोड़ दो मन में कसी सब शृंखलाएँ
तोड़ दो मन में बसी सब संकीर्णताएँ
बिन्दु बन कर मैं तुम्हें ढलने न दूँगा
सिन्धु बन तुमको उठाने आ रहा हूँ।

तुम उठो धरती उठे नभ सिर उठाये
तुम चलो गति में नयी गति झनझनाये
विपथ हो मैं तुम्हें मुड़ने न दूँगा
प्रगति के पथ पर बढ़ाने आ रहा हूँ।

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे
गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ...

('मधु-सञ्चय' से साभार) —अज्ञात

कहाँ छुपी हैं शक्तियाँ!

एक बार देवताओं में चर्चा हो रही थी, चर्चा का विषय था कि मनुष्य की हर मनोकामना को पूरा करने वाली गुप्त चमत्कारी शक्तियों को कहाँ छुपाया जाये। सभी देवताओं में इस पर बहुत वाद-विवाद हुआ। एक देवता ने अपना मत रखा और कहा कि इसे हम एक जंगल की गुफा में रख देते हैं। दूसरे देवता ने उसे टोकते हुए कहा, 'नहीं, नहीं, हम इसे पर्वत की चोटी पर छिपा देंगे।' उन देवता की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि कोई कहने लगा, 'न तो हम इसे कहीं गुफा में छिपायेंगे और न ही इसे पर्वत की चोटी पर, हम इसे समुद्र की गहराइयों में छिपा देते हैं, यही स्थान इसके लिए सबसे उपयुक्त रहेगा।'

सबकी राय सुनने के बाद एक बुद्धिमान् देवता ने कहा, 'क्यों न हम मानव की चमत्कारिक शक्तियों को मानव के मन की ही गहराइयों में छिपा दें। चूँकि बचपन से ही उसका मन इधर-उधर दौड़ता रहता है, मनुष्य कभी कल्पना भी नहीं कर सकेगा कि ऐसी अद्‌भुत और विलक्षण शक्तियाँ उसके अन्तस्तल में छिपी हो सकती हैं। और वह इन्हें बाह्य जगत् में खोजता रहेगा। अतः, इन बहुमूल्य शक्तियों को हम उसके मन की निचली तह में छिपा देंगे।' बाक़ी सभी देवता भी इस प्रस्ताव पर सहमत हो गये। और ऐसा ही किया गया, मनुष्य के भीतर ही चमत्कारी शक्तियों का भण्डार छुपा दिया गया, इसलिए कहा जाता है कि मानव-मन में अद्‌भुत शक्तियाँ निहित हैं।

इस कहानी का सार यह है कि मानव-मन असीम ऊर्जा का कोष है। इनसान जो भी चाहे, हासिल कर सकता है। मनुष्य के लिए कुछ भी असाध्य नहीं है। लेकिन बड़े दुःख की बात है कि उसे स्वयं ही विश्वास नहीं होता कि उसके अन्दर इतनी शक्तियाँ विद्यमान हैं। हे मनुष्य! अपने अन्दर की शक्तियों को पहचानो, उन्हें पर्वत, गुफा या समुद्र में मत ढूँढ़ो, बल्कि अपने अन्दर खोजो और अपनी शक्तियों को निखारो। हथेलियों से अपनी आँखों को ढक कर अन्धकार होने की शिकायत मत करो। आँखें खोलो, अपने हृदय में झाँको और अपनी अपार शक्तियों का प्रयोग कर अपना हर एक सपना पूरा कर लो।

'शिशु मन्दिर सन्देश' से साभार

बच्ची का अटूट भरोसा

जहाज़ उड़ान पर था, गड़बड़ की पहली चेतावनी का यह वाक्य "कृपया, अपनी-अपनी कमर की पेटियाँ कस लें" जहाज़ में बार-बार कौंधने लगा। यात्रियों के दिल की धड़कनें बढ़ गयीं। कुछ ही देर बाद माइक पर आवाज़ आयी—"माफ़ कीजियेगा, तूफ़ान की आशंका की वजह से हम फ़िलहाल खाना नहीं परोस पायेंगे। यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी कमर-पेटियाँ अच्छी तरह कस लें।" मुसाफिरों की धड़कने तेज़ होने लगीं...।

मेरा दिल बैठने लगा। मैंने चारों ओर नज़र दौड़ायी—सब डरे-सहमे से थे। कोई ख़ुदा की इबादत में झुका हुआ था, कोई अपने माथे और छाती पर सलीब का 'क्रॉस' बना रहा था, कोई मन-ही-मन प्रार्थना बुदबुदा रहा था, किसी ने हनुमान चालीसा जपना शुरू कर दिया... सभी अपने-अपने इष्टदेव की चिरौरी में लग गये। मैं भी अपवाद न था। अपवाद थी तो वह बच्ची, मुश्किल से दस साल की होगी, जो सीट पर आलथी-पालथी मारे, अपनी कहानी की किताब में डूबी हुई थी।

और फिर तूफ़ान टूट पड़ा। मनहूस बिजली की गड़गड़ाहट-कड़कड़ाहट ज़ोरों से सुनायी दे रही थी, आकाश में बिजली की कौंधों से आँखें चुँधिया रही थीं और जहाज़—वह तो आकाशरूपी समुद्र में कॉर्क की तरह ऊपर-नीचे उछाला जा रहा था; एक पल में हवा के झोंकों से वह ऊपर खींच लिया जाता तो अगले ही क्षण नीचे टपक जाता...। सभी अधमरे हो गये थे। हाथ जोड़े, सिर झुकाये मुसाफ़िरों की प्रार्थनाओं ने तेज़ी पकड़ ली थी। सबका भविष्य अधर में लटक रहा था... सबका? नहीं, वह प्यारी बच्ची तो मज़े से किताब पढ़ रही थी। ऐसी बात नहीं कि वह तूफ़ान से बेख़बर थी, लेकिन उसके चारों ओर के संसार में शान्ति और व्यवस्था थी। कभी-कभी वह मिनट-भर अपनी आँखें बन्द कर लेती, फिर दोबारा पढ़ना शुरू कर देती, कभी अपने पैर पसार देती तो कभी उन्हें समेट लेती, लेकिन चिन्ता या डर तो उसके आस-पास भी नहीं फटकते दीख रहे थे जब कि तूफ़ानी राक्षस के शिकंजे में जकड़े हम सब ऐसी दयनीय दशा में थे कि अब तो बीच-बीच में लोगों की चीखें भी सुनायी देने लगी थीं। मेरे दोनों हाथ कस कर जुड़े हुए थे, मैं न औरों को देखने की कोशिश कर रहा था, न बाहर

बिजली को देखने का मेरा रत्ती-भर भी साहस था। मैं भगवान् को पुकारता जा रहा था और मेरी नज़रें उस भव्य बच्ची पर गड़ी हुई थीं जो शान्त, निर्भीक, प्रसन्न, किसी भी अपशगुन के घटने से बेख़बर अपनी दुनिया में मस्त थी...!! सचमुच मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

सभी की सच्ची प्रार्थनाओं ने हवाई जहाज़ को तूफ़ान से उबार लिया। झञ्झा के चाबुक लगने बन्द हुए; विमानचालक की आवाज़ सुनायी दी—"मैं हूँ आपका विमानचालक कप्तान डिसूज़ा। हम तूफ़ानी चक्र से पूरी तरह मुक्त हो गये हैं, आप सबके सहयोग के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! लेकिन कृपया अपनी पेटियाँ बाँधे रहें, अब हम अपने लक्ष्य पर पहुँचने वाले हैं।"

विमानचालक की आवाज़ सुन ख़ुशी की चीखों से जहाज़ गूँजने लगा। पास-पास बैठे लोग गले मिले। एक-दूसरे के प्रति सबकी मुस्कुराहटों के आदान-प्रदान से सभी यात्री एक परिवार बन गये, मैंने फिर उस बच्ची को देखा—वह भी मुस्कुरा रही थी—ओह! उस भव्य बालिका की वह गरिमामयी मुस्कान!!

अन्तिम दस मिनट का सफ़र कितना ख़ुशनुमा था! सभी अपरिचित परिचित बन चुके थे—खाने का एक गस्सा पेट में नहीं गया था लेकिन सबका हृदय ख़ुशी से भरा हुआ था, विमान-परिचारिकाओं ने हम सबके हाथों में जब खाने के बन्द पुलिन्दे पकड़ाये तो तालियों की गड़गड़ाहट से अलग ही समां बँध गया, लेकिन यह सब होते हुए भी मेरे लिए तो बस वही बच्ची शुरू से अलग समां बाँधे हुए थी जो अकेली सफ़र कर रही थी, पूरी तरह से ख़ुश, चुपचाप थी, अपनी ही दुनिया में मगन थी...।

हवाई-पट्टी पर जहाज़ सुरक्षित उतर आया। सबने अपने-अपने प्रभु को नमन किया, मैं भी अपवाद न था, लेकिन मैं उस प्यारी बच्ची से दो बात करने के लिए बेताब हो रहा था जिसने एक उड़ान में मुझे कितना कुछ सिखा दिया था!

सब उतरे, मैं अपनी नन्हीं शिक्षिका के पीछे-पीछे उतरा। पहले मौके पर ही मैंने उसके कन्धे पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा—"बेटी, क्या नाम है तुम्हारा? जब अपना जहाज़ तूफ़ान में फँसा हुआ था तब तुम्हें बिलकुल डर नहीं लग रहा था क्या? तुम बिलकुल शान्त दीख रही थी!"

उस प्यारी बच्ची ने जवाब दिया—"जी, मेरा नाम 'होप' है और मुझे

डर क्यों लगता भला? मेरे पापा ही विमानचालक हैं और वे मुझे घर ले जा रहे थे।"

मैं दंग रह गया। घुटनों पर बैठ, मैं उसे गले लगाये बिना न रह सका। तब तक उसके पापा भी क़रीब आ गये थे। मुझे बच्ची को अंक में भरते देख वे मुस्कुरा उठे। बेटी की उनके साथ आँखें चार होते ही वह 'पापाऽऽ' कह दौड़ कर उनकी खुली बाँहों में समा गयी।

मुझसे विदा ले 'होप' अपने पिता के हाथ में हाथ डाले आगे बढ़ गयी। मैं पिता-पुत्री को एकटक देखता रह गया। मेरे हृदय में बस वही एक वाक्य रह-रह कर गूँज रहा था—"मेरे पापा ही विमानचालक हैं और वे मुझे घर ले जा रहे थे।"

बच्ची का वह भरोसा!! वह मुझसे पूछ रहा था, हर एक से पूछ रहा था—संसार के इस जहाज़ पर बैठे दुःख में इतने कातर क्यों हो जाते हो भला? क्या वह ईश्वर तुम्हारा खेवैया नहीं जो तुम्हें तुम्हारे असली घर—तुम्हारे लक्ष्य को लिये जा रहा है!

मैंने 'होप', यानी उस आशा को नमन किया जिसने एक हवाई-यात्रा में मेरा हाथ उस 'परम सामञ्जस्य' के हाथों में थमा दिया था।

'अग्निशिखा', जुलाई २०१० से —वन्दना

दीया फिर भी जल रहा है

रात के अँधेरे में एक साधु चला जा रहा था। घोड़े की टाप सुनते ही उसे लगा कि सामने से कोई घुड़सवार आ रहा है। साधु ने उस घुड़सवार को रास्ता दे दिया, किन्तु यह क्या! घुड़सवार साधु के ठीक सामने आकर खड़ा हो गया। 'साधु, तुम मुझे जानते नहीं?' साधु ने कहा, 'नहीं भाई, मैं तुम्हें नहीं जानता।' घुड़सवार बोला, 'मैं इस क्षेत्र का प्रसिद्ध डाकू हूँ।' साधु ने कहा, 'ठीक है।' डाकू ने कहा, 'तुम्हें डर नहीं लगा।' साधु ने कहा, 'मैं सिर्फ़ भगवान् से डरता हूँ।' डाकू क्रुद्ध हो गया। उसने कहा, 'साधु, देख, सामने टीले पर जो घर है, उस घर को मैं पाँच बार लूट चुका हूँ।' अब की बार साधु मुस्कुराया। साधु ने कहा, 'अवश्य लूटा होगा, परन्तु उस टीले पर अब भी दीया जल रहा है और तुम अभी तक अँधेरे में भटक रहे हो।' डाकू चुपचाप सिर झुकाये चला गया। —'मधु-सञ्चय' से साभार

आदर्श वृत्ति है केवल भगवान् का ही होना, केवल भगवान् के लिए ही कार्य करना और सबसे बढ़ कर, केवल भगवान् से ही बल, शान्ति और सन्तुष्टि की आशा करना। भगवान् परम दयालु हैं और वह सब देते हैं जिसकी हमें लक्ष्य तक यथाशीघ्र पहुँचने के लिए ज़रूरत हो।

श्रीमाँ

शुभ कामनाओं सहित

श्रीअरविन्द सोसाइटी राजस्थान राज्य समिति, जयपुर ३०२०१९ (राजस्थान)

www.aurosocietyrajasthan.org

प्रमुदित प्रयास

वह आनन्द जो व्यक्ति को भगवान् की ओर प्रयास करने से प्राप्त होता है

(श्रीमाँ द्वारा दिया गया पुष्प का आध्यात्मिक अर्थ तथा व्याख्या)

With best compliments from:

AURO MIRRA INTERNATIONAL SCHOOL,

110, Gangadhar Chetty Road,
Ulsoor, Bangalore-560042
Email:accounts@auroschoolsulsoor.org
www.auroschoolsulsoor.org

AURO MIRRA CENTRE OF EDUCATION

An Integral School,
SSST Nagar, Patiala
E-mail: auromirrapta@gmail.com

SRI AUROBINDO INTERNATIONAL SCHOOL

(A Senior Secondary School)
Sri Aurobindo Marg,
Rose Garden-Bus Stand, Patiala
E-mail: auroschoolpta@gmail.com

Date of Publication: 1st January 2024
Rs. 30 (Monthly)
अग्निशिखा एवम् पुरोधा, दिसम्बर २०२३, वर्ष १, अंक ६, पूर्णांक ६
प्रकाशक स्थलः सोसायटी हाउस, ११ सैं मार्तं स्ट्रीट, पॉडिचेरी ६०५००१

SRI AUROBINDO
A New Dawn
A HAND-PAINTED ANIMATION FILM BY SRI AUROBINDO SOCIETY

Our ideal is not the spirituality
that withdraws from life
but the conquest of life
by the power of the spirit.
- *Sri Aurobindo*

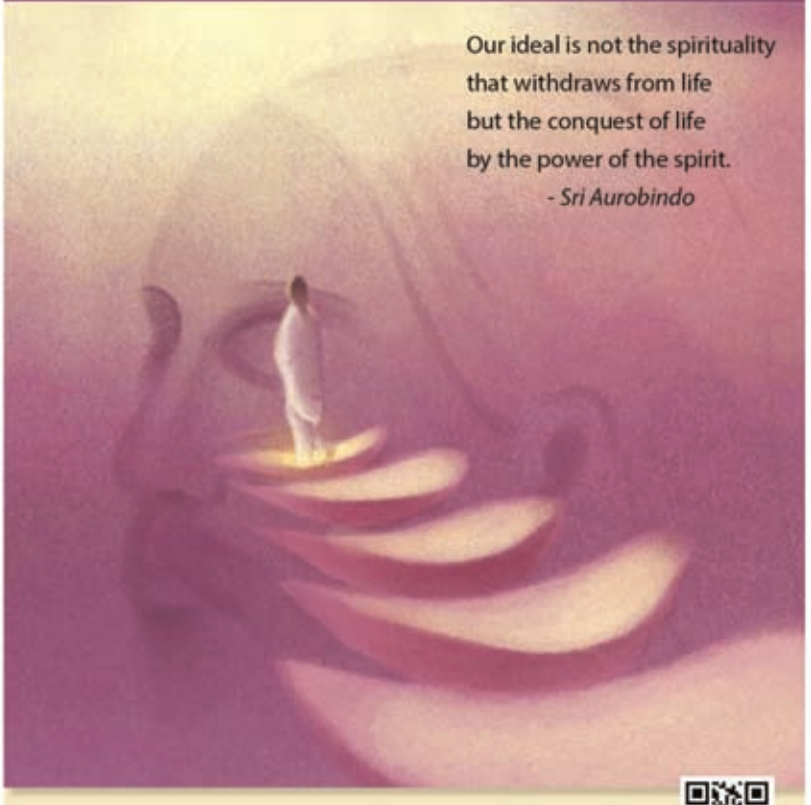

Watch the film at **www.anewdawn.in**